International Journal of Applied Research 2017; 3(6): 80-81

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 80-81
www.allresearchjournal.com
Received: 12-04-2017
Accepted: 13-05-2017

KM Deepti
Assistant Professor Guest, Department of History, Sri Aurobindo College, University of Delhi, Delhi, India

Correspondence
KM Deepti
Assistant Professor Guest, Department of History, Sri Aurobindo College, University of Delhi, Delhi, India

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण प्रभाव

KM Deepti

प्रस्तावना

कोई भी धर्म या सम्प्रदाय जब उदित होता है तो उसमें सबसे प्रमुख जिस तत्व का योगदान होता है, वह है, तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति। हमें इतिहास के विभिन्न सम्प्रदायों के उदय में भी देखें तो यही तत्व प्रमुखता से नजर आता है। फिर चाहे वह जैन धर्म, बौद्ध धर्म या इस्लाम धर्म हो। भक्ति आंदोलन भी इसका अपवाद नहीं है। तत्कालीन समाज में प्रचलित विखण्डनकारी प्रवृत्तियों के कारण ही इसका उदय हुआ है।

दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ ही भारतीय समाज में एक नया समुदाय उभरकर आया और इस समुदाय का खान-पान, वेशभूषा, रीति-रिवाज सभी पूरी तरह शेष भारतीय उपमहाद्वीप में रहने वाले लोगों से भिन्न थे और अपने अलग रीति-रिवाजों एवं मान्यताओं के चलते ये दोनों समुदाय आपस में सौहदयतापूर्ण सामंजस्य स्थापित करने में विफल रहें, समाज को इस बढ़ते तनाव को कम करने के लिए भक्तिकालीन संतों को आगे आना पड़ा, और उन्होंने वे मान्यताऐं एवं प्रथाएँ जो इन दोनों सम्प्रदायों के मिलन में बाधक थी उनका खण्डन किया इसी प्रयास को भक्ति आन्दोलन के नाम से जाना जाता है।

भक्तिकालीन संत इस बात से भली-भाँति परिचित थे, कि चाहे लोगों को जितने भी प्रेम एवं भाई चारे से रहने के लिए प्रेरित करें, वे जब तक इस बात को स्वीकार नहीं करेंगे कि तब-तक धर्म में पहले से मौजूद अवरोधों को दूर नहीं किया जाता है। इसलिए इन संतों ने दोनों ही धर्मो के ऐसे नियमों मान्यताओं पर कुठाराघात किया, जो उनके मिलन में बाधक थे। इसी काल के प्रसिद्ध संत नानक देव ने स्पष्ट कहा था कि

''एक मेव ते सब जग उपजा।
नर हो चाहे नारी हो।।''

इस तरह के संदेश भिन्न-भिन्न समय पर, भिन्न-भिन्न स्थानों, पर भिन्न-भिन्न शब्दों, का सहारा लेकर सभी संतों ने कहे फिर चाहे कबीर हो या तुलसीदास या रैदास हो या फिर कोई अन्य।

अगर हम इनके सिद्धांतों का भी अवलोकन करे तो भी यह बात पूर्णता: सत्य ही प्रतीत होती हैं जैसा कि भिन्न-भिन्न धार्मिक आस्थाओं एवं विचारों को मानने के बावजूद सभी में एकता की भावना को स्वीकार करना।'' [1]

जाति-पाति का कटू विरोध करना।'' [2]

मनुष्यों एवं परमात्मा के बीच, जो संबंध है वह मनुष्यों के सदगुणों या उन्नत गुणों पर निर्भर करता हैं। ना कि उसके धन-सम्पन्नता या जाति विशेष से उत्पन्न होने पर।'' [3] धार्मिक कर्मकाण्डों, व्रतों, मूतिपूजा एवं तीर्थ-स्थलों के लिए दिये जाने वाली कठोर यातनाओं एवं कष्टों की स्पष्ट शब्दों में आलोचना एवं निंदा करना।

यदि हम उपरोक्त चर्चा के पश्चात शक्ति आन्दोलन के प्रभाव का विश्लेषण करे और इस बात का निरीक्षण करे कि भक्ति आन्दोलन जिन कारणों को लेकर या जिन शुभ भावनाओं को लेकर आरम्भ किया गया था क्या उन्हें प्राप्त कर सकता तो इस प्रश्न का उत्तर पूरी तरह हाँ में देना अतिशयाक्ति हो सकता हैं, परन्तु इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि उन्होंने समाज के दूषित वातावरण एवं समाज में फैली कडवाहट को कम करने में सफल भूमिका का निर्वाह किया। और इसी के चलते भारत में गंगा-यमूनी संस्कृति का अभुदय हुआ जिसपर वर्तमान में भी चलने का प्रयास किया जा रहा है।

कुछ विचारक भक्ति आन्दोलन कालीन संतों की इस बात पर आलोचना करते हैं, कि उन्होंने महिलाओं की मूक्ति या उनके शोषण को रोकने का प्रयास नहीं किया किन्तु यदि हम निष्पक्ष होकर विचार करे तो हम देखते है, कि यह उस युगबोध की ही सीमा थी आधुनिक युग के समाज उस काल में इस प्रकार की मानसिकता उत्पन्न नहीं हुई थी इसी काल में विश्व के अन्य कोनो में जो भी अन्य आन्दोलन हुये उन्होंने भी नारीवादी तत्वों को इतना महत्व नहीं दिया क्योंकि यह उस युग की सीमा थी।

अतः नारी एवं नारीवाद से जुडे मुद्दे ना उठाने के लिए इन संतों को दोष देना उचित नहीं होगा। लेकिन फिर भी यह इन सन्तों की सीमा मानी जा सकती है। शायद इसका कारण यह हो सकता हैं, कि उस समय धार्मिक वेमैस्य को कम करना प्रमुख विषय था और अन्य गौण। लेकिन यह अभी भी शोध का विषय है, कि जब ये पूरे समाज से जुडे विषय उठा रहे थे और समाज पर उसका सकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा था तो नारी के ऊपर भी उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा ही होगा?'' [4]

संदर्भ

1. Khanna, Ml. मध्यकालीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास Delhi Orient Black Swan 2012
2. Iraqi.s. मध्यकालीन भारत में भक्ति आन्दोलन Delhi; Chaukamba Publication House, 2
3. Habib मध्यकालीन भारत 8 Volume. Delhi Rajkamal.
4. Chandra.s History of Medival Indian and (800 -1700) Delhi Orient Longman